13

कलीसिया के लिए मसीह के दानों को समझना

(4:7–16)

पहली सदी में जब नया नियम लिखा जा रहा था, नवजात कलीसिया को उचित रूप में कार्य करने में सहायता के लिए विशेष दानों की आवश्यकता थी। नया नियम पूरा हो जाने पर इन विशेष दोनों की कोई आवश्यकता नहीं रहनी थी और ये मिलने बंद हो जाने थे।

ये विशेष दान, जिन्हें मूलतया ''आत्मिक'' (*pneumatikos*) कहा जाता है 1 कुरिन्थियों 12:1–31 में गिनाए और मिलाए गए हैं। वे कलीसिया को एक करने और सुधारने के लिए बनाए गए थे; परन्तु कुरिन्थुस के लोग उन्हें फूट डालने वाले बना रहे थे, एक ऐसा तथ्य जिसने पौलुस को उनके इस्तेमाल के लिए नियम देने के लिए उकसाया।

''आत्मिक दान'' दूसरे लोगों को प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा दिए जाते थे। प्रेरितों 6:1–6 में, यरूशलेम की कलीसिया में विशेष काम के लिए सात पुरुषों को चुना गया था और प्रेरितों ने ''उनके ऊपर हाथ रखे'' थे। इन पुरुषों में से एक का नाम स्तिफनुस था जो ''लोगों में बड़े-बड़े अद्‌भुत काम और चिह्न'' दिखा सकता था (प्रेरितों 6:8)। एक और का नाम फिलिप्पुस था जो सामरिया में प्रचार करते समय अपने संदेश की पुष्टि के लिए चिह्न दिखाता था (प्रेरितों 8:6)। सामरिया के लोगों के मसीही बनने और यरूशलेम में प्रेरितों को इसका पता चलने पर, उन्होंने पतरस और यूहन्ना को सामरिया में उनके ऊपर हाथ रखकर उन्हें आत्मिक दान देने के लिए भेजा। फिलिप्पुस ने भाइयों को ये दान देकर सामरिया में प्रेरितों के आगे का समय क्यों नहीं बचाया? इसका सीधा सा उत्तर है कि केवल प्रेरित ही आगे दूसरों को यह दान दे सकते थे।

2 तीमुथियुस 1:6 में लिखते समय पौलुस ने आत्मिक दानों की बात की, ''उस वरदान को जो *मेरे हाथ रखने के द्वारा* मुझे मिला है प्रजवलित कर दे।'' 1 तीमुथियुस 4:14 में वह इन विशेष योग्यताओं की बात भी कर रहा था: ''उस बरदान से जो तुझ में है, ... प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह।'' ''प्राचीनों'' का अर्थ कलीसिया के ऐल्डर है। क्या इसका अर्थ यह है कि ऐल्डर ये दान दे सकते थे? पौलुस ने जब यह कहा कि तीमुथियुस को दान ''मेरे हाथ रखने के द्वारा'' मिला था तो उसने यूनानी उपसर्ग (*dia*) का इस्तेमाल किया जिसका अर्थ है ''से निकलना,'' ''कार्य का माध्यम या साधन।''[1] परन्तु तीमुथियुस के दान की बात ''प्राचीनों के हाथ रखते समय'' होने की बात करते हुए पौलुस ने (*meta*) का इस्तेमाल किया जो ''के साथ संगति'' या ''से संगति'' होना का संकेत देता है।[2] तीमुथियुस को दिया गया दान पौलुस *के द्वारा* दिया गया था; और प्राचीनों के हाथ रखने की बात केवल दान *के साथ* बल्कि जो मिलाने या यह कहने जैसी थी कि ''परमेश्वर तुम्हें आशीष दे।'' आत्मिक दान केवल

प्रेरितों के द्वारा दिए जाते थे।

ये दान कब तक दिए जाते रहे ? दान प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा दिए जाते थे और इन्हें प्राप्त करने वाले इन दानों को आगे नहीं दे सकते थे, इसका अर्थ यह हुआ कि ऐसा कोई कारण नहीं है कि अन्तिम प्रेरित की मृत्यु हो जाने के बाद इन दानों की आवश्यकता रही हो या यह दिए जाते हों। अब तक नया नियम पूरा हो जाना था और नवजात कलीसिया को दिए गए दानों का उद्देश्य पूरा हो जाना था।

कलीसिया को दिए गए मसीह के दान सभी ''आत्मिक'' नहीं थे न ही वह सभी चमत्कारी थे। बताए गए दानों के अलावा मसीह ने कलीसिया को कुछ साधारण और जारी रहने वाले दान दिए थे।

विजयी मसीह का दान देना (4:7-10)

7पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है। 8इसलिए वह कहता है कि ''वह ऊंचे पर चढ़ा, और बन्दियों को बान्ध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए।'' 9(उसके चढ़ने से, और क्या पाया जाता है केवल यह कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था। 10और जो उतर गया यह वही है जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ परिपूर्ण करे)।

आयतें 7, 8. सामूहिक रूप में इन सभी दानों को **मसीह के दान** कहा जाता है (4:7)। मसीह ने कलीसिया को वह दिया जिसकी आवश्यकता थी। यह **अनुग्रह** का दान इस बात में था कि इसे कमाया या अर्जित नहीं किया गया था बल्कि मसीह द्वारा कलीसिया को मुफ्त दिया गया था।

पौलुस ने एक बड़ी विजय के संदर्भ का इस्तेमाल करते हुए इन दानों के बारे में समझाया। आयत 8 का हवाला भजन संहिता 68:18 से लिया गया है, चाहे भजन में और यहां दिए गए हवाले में थोड़े से परन्तु महत्वपूर्ण अन्तर हैं। (1) भजन संहिता परमेश्वर के ''चढ़ने'' की बात करता है जो सम्भवतया यहोवा के सियोन पहाड़ पर पुराने नियम के अपने लोगों के साथ वास करने की बात है। (2) भजन संहिता परमेश्वर के दान ''पाने'' की बात करता है। इस पत्र में पौलुस स्पष्ट रूप में यह दिखाते हुए कि इस वचन में उस के सम्बन्ध में **दानों** की उम्मीद की गई है, भजन संहिता को मसीह पर लागू कर रहा था। परन्तु पुराने नियम के हवाले की प्रासंगिकता में मसीह दान *दे रहा* था न कि *ले रहा* था। इसके अलावा पौलुस द्वारा भजन संहिता का इस्तेमाल यह दिखाने के लिए किया गया कि मसीह के दान उसके ऊंचे पर चढ़ *जाने के बाद* अर्थात अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद परमेश्वर के दाहिने हाथ मसीह की महिमा पाने के बाद दिए गए थे। इस पत्र की बात भजन संहिता की प्रासंगिकता में कोई समस्या नहीं दिखाती है, परन्तु दान देना या दान लेना का क्या अर्थ है ?

यहूदी तरगुमों[3] में कहा गया था कि भजन संहिता मूसा के परमेश्वर की ओर से व्यवस्था लेने के लिए ऊंचाई पर जाने और उस व्यवस्था को इस्राएल को दिए जाने की बात करता है।[4] तरगुमों ने इब्रानी धर्मशास्त्र और LXX में लेने की अवधारणा को देने में बदल दिया और इस कारण

मूसा को व्यवस्था को इस्राएल को दिए जाने के रूप में दिखाया जाता था। इफिसियों में लगता है कि पौलुस ने भी यही काम किया, क्योंकि उसका ज़ोर मसीह के ऊपर उठाए जाने और उसके कलीसिया को दान देने पर था। पौलुस बेशक तरगुमों से परिचित होगा और हमें याद रखना चाहिए कि पवित्र आत्मा अपनी बात कहने के लिए ऊपर नीचे कर सकता है। यह तो ऐसा है जैसे पवित्र आत्मा कह रहा हो, ''मैंने दाऊद को इस भजन को लिखने में यह दिखाने के लिए अगुआई की कि जब परमेश्वर इस्राएलियों के साथ अपने निवास को लेने के लिए सियोन पहाड़ पर चढ़ा, तो इस्राएलियों ने उसकी आराधना और सेवा के दान या उपहार भेंट किए। मैंने मसीह के परमेश्वर के दाहिने हाथ ऊंचा किए जाने और उसके कलीसिया को दान देने पर ज़ोर देने के लिए पौलुस को भी इस भजन का इस्तेमाल करने में अगुआई दी।'' इफिसियों में भजन संहिता 68 का इस्तेमाल व्याख्या की न होकर प्रासंगिकता की बात है और ऐसी प्रासंगिकता बनाने की अगुआई पौलुस को पवित्र आत्मा की ओर से दी गई थी।[5]

प्रेरितों 2:33 के पीछे भजन संहिता 68:18 हो सकता है और इस कारण पिन्तेकुस्त के दिन इसे कलीसिया के आरम्भ से जोड़ा जाना चाहिए। मसीह पहले ही ऊंचा किया जा चुका था और उस दिन उसने उद्धार के दान में से और पवित्र आत्मा का दान आज्ञा मानने वाले विश्वासियों के ऊपर बहा दिया था (प्रेरितों 2:38)। महिमा पाया हुआ मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ रहता है और प्रेरितों 2 में आरम्भ से लेकर वर्तमान समय और आगे तक उसने कलीसिया को आवश्यक हर चीज़ दे दी है।

इस संदर्भ में **बन्धुआई को बांध ले गया** इस तथ्य का संकेत देता है कि मसीह ने अपने क्रूस और खाली कब्र के द्वारा पाप, मृत्यु और कब्र के ऊपर विजय पा ली है। उसे प्राचीनकाल के शासकों के अपने कैदियों को पीछे छोड़कर घर लौटने की तरह इन शत्रुओं को बंदी बनाते हुए दिखाया गया है। अपने पुनरुत्थान के बाद मसीह विजयी होकर स्वर्ग में लौट गया (देखें 1:20, 21)। पाप के पुराने बंधियों को मसीह की सेवा करने के लिए सदा के लिए मुक्त कर दिया गया है। पौलुस ने अपने आपको और दूसरे लोगों को मसीह के दासों के रूप में बताया (रोमियों 1:1; फिलिप्पियों 1:1; तीतुस 1:1)। ''दास'' (*doulos*) का अनुवाद है और इसका अर्थ है ''गुलाम'' जो किसी दूसरे की पक्की सेवा के लिए लगा है।[6] इस अर्थ में मसीही लोगों को मसीह के बंदियों के रूप में देखा जा सकता है।

आयतें 9, 10. कोष्ठक में दिए गए वाक्य में ज़ोर मसीह के ऊपर ऊंचा उठाए जाने और कलीसिया को उसके दान देने पर है। मसीह पृथ्वी पर रहने, हमारे पापों के लिए मरने और जी उठने के लिए स्वर्ग से **उतरा**। अब **वही ऊपर चढ़** गया है और स्वर्ग में फिर से ''सब के ऊपर'' है (1:21)।

अपनी मृत्यु के समय से पुनरुत्थान तक अधोलोक में रहने के रूप में मसीह के **पृथ्वी की निचली जगहों में** उतरने की व्याख्या करने का कोई भी प्रयास (देखें प्रेरितों 2:27) पौलुस द्वारा दिए जाने वाले ज़ोर से चूकना है। इसी प्रकार से हमें इस आयत को समझने के लिए अपने देहधारी होने पर उसके नीचे आने को पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा में उसके आने से अलग करने की आवश्यकता नहीं है। पौलुस के कहने का अर्थ था कि मसीह मरने के लिए पृथ्वी में उतरा था और कलीसिया के लिए दान भेजने के लिए स्वर्ग में चढ़ा था। ''कलीसिया को दान देने और

अपनी भूमिका के लिए तैयार करने में अपने आत्मा के द्वारा सक्रिय ही है जो अपने ऊपर उठाए जाने के गुण से संसार का प्रभु बन गया।''[7]

सारे आकाश से ऊपर भजन संहिता 68 के हवाले में ''ऊंचे'' से मेल खाता है (देखें 4:8) और मसीह के लिए वातावरण (जगत) के ऊपर होना बताता है। वह उस सब से जो सृजा गया है ऊपर है और अब ''[परमेश्वर के] दाहिने हाथ'' है (1:20)। यह ऊंचा किया जाना मसीह को **सब कुछ परिपूर्ण** करने के योग्य बनाता है। मसीह के ऊंचा किए जाने और 1:22, 23 में वैश्विक शासन की पौलुस की बात को ध्यान में रखे हुए हम देखते हैं कि उसके ऊंचा किए जाने से उसके लिए आत्मिक क्षेत्र में सर्वोच्च शासक और कलीसिया के सिर और सहायक के रूप में हर बात में संसार को परिपूर्ण करने के लिए उसके लिए रास्ता खुल गया।

दान जो मसीह ने दिए (4:11)

11और उस ने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यवक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया।

आयत 11. मसीह पृथ्वी में नीचे उतरा और विजयी प्रभु के रूप में स्वर्ग में ऊपर चढ़ गया ताकि कलीसिया के सिर के रूप में वह अपने लोगों को दान दे सके। इस आयत में पौलुस ने इन दोनों में से कुछ को गिनाया।

पहले उसने **प्रेरितों** का नाम लिया। मसीह द्वारा अपने बारह प्रेरितों को चुने जाने पर उन्होंने विशेष योग्यताओं को पूरा किया जिन में पुनरुत्थान के गवाह होना (प्रेरितों 1:8, 22, 23; 1 कुरिन्थियों 9:1, 2) और आश्चर्यकर्म करना (2 कुरिन्थियों 12:12) शामिल था। इन लोगों को ''पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया गया था'' (प्रेरितों 1:5), जिस से उन्हें मसीह का संदेश पाने और बताने और उस संदेश को आश्चर्यकर्मों के साथ पुष्टि करने की सामर्थ दी गई थी (प्रेरितों 1:8; 2:1-4; इब्रानियों 2:3, 4)। वे आश्चर्यकर्म करने के दान दूसरों पर अपने हाथ रखने के द्वारा उन्हें दे सकते थे (प्रेरितों 6:6; 8:6; 2 तीमुथियुस 1:6)।

''प्रेरित'' (*apostolos*) शब्द *apo,* ''से'' और *stellō,* ''भेजना'' से बने मिश्रित क्रिया शब्द *apostellō* का संज्ञा रूप है। विचार केवल ''से भेजना'' नहीं है बल्कि इसमें एक निश्चित उद्देश्य शामिल है।[8] मसीह में अपने प्रेरितों को परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार अर्थात ''शुभ समाचार'' सुनाने का मिशन यानी उद्देश्य दिया (मत्ती 10:7; मरकुस 16:15)। ये प्रेरित कलीसिया को दिए गए मसीह के दानों में से थे।

नये नियम में ''प्रेरित'' शब्द का इस्तेमाल यीशु द्वारा चुने गए बारह पुरुष के होने वाले इस्तेमाल से व्यापक है। मत्तियाह को यहूदा का स्थान लेने के लिए (प्रेरितों 1:12-26) और तरसुस के शाऊल (पौलुस) को ''अधुरे दिनों का जन्मा'' के रूप में चुना गया था (1 कुरिन्थियों 15:8)। पौलुस ने कहा कि वह प्रेरितों में सबसे छोटा था क्योंकि उसने कलीसिया को सताया था। फिर भी उसने दावा किया कि वह बारह प्रेरितों में से किसी से भी कम नहीं था (1 कुरिन्थियों 15:9; 2 कुरिन्थियों 11:5; 12:11)। इब्रानियों 3:1; गलातियों 1:19; और प्रेरितों 14:14 में

यीशु, याकूब (यीशु के भाई) और बरनबास सहित अन्यों को प्रेरित कहा गया था; परन्तु बेशक उन्हें केवल एक विशेष मिशन पर भेजे जाने के अर्थ में प्रेरित कहा गया न कि मत्तियाह की तरह बारहों के साथ गिना जाने के लिए। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि प्रेरितों के उत्तराधिकारी थे। उनके समय के बाद पुनरुत्थान का गवाह होने के कोई भी योग्य नहीं था। प्रेरितों का काम सदा के लिए पूरा हो गया था और पहली सदी में मसीह के प्रेरितों के रूप में काम करने वालों को उनकी विशेष भूमिका के लिए सदा तक जाना जाएगा (देखें मत्ती 19:28; प्रकाशितवाक्य 21:14)।

नये नियम के **भविष्यवक्ता** वे लोग थे जो ईश्वरीय संदेश सुनाते थे।[9] ''भविष्यवक्ता'' के लिए यूनानी शब्द (*prophētēs*) है और यह उसके लिए होता है जो ''बोलता'' या ''संदेश को आगे करता'' है।[10] नये नियम के भविष्यवक्ताओं के मामले में इसका अर्थ परमेश्वर के लिए ''आगे बोलना'' था। भविष्यवक्ता चाहे कई बार भविष्य के बारे में पहले से बताते थे, परन्तु उनका मुख्य काम परमेश्वर की इच्छा को बताना होता था। नये नियम में बहुत कम लोगों को भविष्यवक्ताओं का नाम मिला है: अगबुस (प्रेरितों 11:27, 28; 21:10, 11), अन्ताकिया के कई भविष्यवक्ता (प्रेरितों 13:1), यहूदा और सिलास (प्रेरितों 15:32) और फिलिप्पुस की चार पुत्रियां (प्रेरितों 21:9)। प्रेरितों का चयन मसीह द्वारा किया गया परन्तु हमें स्पष्ट रूप में यह नहीं बताया गया है कि नये नियम की कलीसिया में भविष्यवक्ता कैसे बनते थे।

क्योंकि भविष्यवाणी रोमियों 12 और 1 कुरिन्थियों 12 में दिए गए आत्मिक दानों में से एक थी, और क्योंकि हम ने निष्कर्ष निकाला है कि यह दान प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा दिए जाते थे (4:7 पर टिप्पणियां देखें), ऐसा लगेगा कि नये नियम के भविष्यवक्ताओं को स्थानीय कलीसिया में ''उन्नति और उपदेश और शांति'' के काम के लिए प्रेरितों द्वारा चुना जाता था (1 कुरिन्थियों 14:3)। भविष्यवाणी का दान पाए हुए लोगों को अपना संदेश दूसरों से सुनने या व्यक्तिगत अध्ययन करने के बजाय सीधे आत्मा की प्रेरणा से मिलता होगा। भविष्यवक्ता वह दान थे जो मसीह में परमेश्वर का प्रकाशन बताने के लिए आरम्भिक कलीसिया को दिए गए।

प्रेरितों की तरह परमेश्वर के संदेश को बताने और उसकी पुष्टि के लिए भविष्यवक्ता भी ईश्वरीय सामर्थ का इस्तेमाल करते थे। वे नया नियम पूरा होने से पहले के कलीसिया के शैश्वकाल के दौरान इसके बढ़ने और विकास करने में सहायता के लिए मसीह का दान थे। तब तक परमेश्वर का सदेंश परमेश्वर के आत्मा के द्वारा प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया जाता था। उनका सुनाया गया संदेश मसीह की कलीसिया की नींव का काम करता था (देखें 2:20; 3:5)। नया नियम सम्पूर्ण रूप में उपलब्ध हो जाने पर, आत्मा की प्रेरणा से बोलने वाले इन लोगों की आवश्यकता नहीं रही, क्योंकि परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लोगों को दिया गया संदेश परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई पुस्तक में पक्के तौर पर लिखा जा चुका था।

सुसमाचार सुनाने वाले ''अच्छी बातों का संदेश देने वाला, अर्थात सुसमाचार की कहानी बताने वाला'' को कहा जाता था।[11] ''सुसमाचार'' के लिए यूनानी भाषा का शब्द (*euangelion*) मसीह के द्वारा उद्धार के ''शुभ समाचार'' के लिए है।[12] सुसमाचार सुनाने वाले का काम इस संदेश को बताना होता था (*euangelizō*)। नये नियम में फिलिप्पुस को ''सुसमाचार प्रचारक'' (इवैंजलिस्ट) कहा गया (प्रेरितों 21:8) और तीमुथियुस को ''सुसमाचार

प्रचार का काम'' करने को कहा गया (2 तीमुथियुस 4:5)। इन लोगों पर चाहे प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा आत्मिक दान दिए गए थे (प्रेरितों 6:5, 6; 8:6; 2 तीमुथियुस 1:6)। परन्तु ये दान सुसमाचार के प्रचार के काम में स्वाभाविक नहीं थे। पहली सदी से लेकर आज तक मसीह के शुभ समाचार को सुनाना कलीसिया के मिशन को पूरा करने का महत्वपूर्ण भाग रहा है। पहली सदी के सुसमाचार प्रचारकों को अपने काम को करने के योग्य बनाने के लिए विशेष आत्मिक दान दिए जाते थे। आज परमेश्वर ने सुसमाचार प्रचारकों को एक विशेष पुस्तक अर्थात परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया नया नियम दिया है, जिस में से वे शुभ समाचार को सुनाएं।

सुसमाचार प्रचारक स्थानीय कलीसियाओं के साथ काम करते थे, जैसा कि इफिसुस की कलीसिया की सहायता करने के लिए तीमुथियुस को दिए गए पौलुस के निर्देश में पता चलता है (1 तीमुथियुस 1:3, 4)। उनका काम मुख्यतया सुसमाचार का प्रचार करना और कलीसियाएं स्थापित करना लगता है (देखें प्रेरितों 8:5–12)। यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रेरित सभी कलीसियाओं के साथ काम करते थे (2 कुरिन्थियों 11:28), भविष्यवक्ता कलीसियाओं के भीतर काम करते थे (1 कुरिन्थियों 12; 14) और सुसमाचार प्रचारक नई मण्डलियां स्थापित करने और उन्हें बढ़ाने के लिए काम करते थे (तीतुस 1:5)।

चरवाहे अर्थात पास्टरज़ *poimēn* का अनुवाद है, जिसका अर्थ है ''चरवाहा'' यीशु ने दिखाया कि उसके झुण्ड पर खतरा बढ़ने पर भाड़े का मज़दूर चाहे भाग जाएगा पर चरवाहा आवश्यकता पड़ने पर भेड़ों के लिए अपनी जान भी दे देगा (यूहन्ना 10:11–13)। भेड़ों के लिए असली चरवाहे की चिंता केवल झुण्ड को चलाने से कहीं बढ़कर होती है। नये नियम में कलीसिया में अगुओं की एक ही जमात के लिए तीन अलग-अलग शब्द हैं। ये लोग ''चरवाहे या पास्टरज़,'' ''प्राचीन या ऐल्डरज़'' और ''अध्यक्ष या बिशपज़'' होते हैं। इन सभी शब्दों का इस्तेमाल इफिसुस में ''कलीसिया के प्राचीनों'' के साथ पौलुस की मुलाकात के विवरण में किया गया है (प्रेरितों 20:17, 28)। ''प्राचीन'' *presbuterōs* का अनुवाद है और इसका अर्थ है ''बुज़ुर्गों की सभा।''[13] कलीसिया के सम्बन्ध में इस शब्द का अर्थ उन लोगों के लिए है जो विश्वास में अधिक सयाने हैं, न कि नये बनने वाले चेले (1 तीमुथियुस 3:6)। इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों से, पौलुस ने कहा, ''अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस में पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है'' (प्रेरितों 20:28)। अनुवादित शब्द ''अध्यक्ष'' का यूनानी शब्द (*episkopos*) प्राचीनों के झुण्ड की निगरानी करने के काम का संकेत देता है। प्रेरितों 20:28 में पौलुस ने आगे कहा कि प्राचीनों, या अध्यक्षों का काम ''परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली'' करना था। यह विवरण हमें इफिसियों 4 में वापस ले आता है: ''रखवाले'' और ''अध्यक्ष'' और ''प्राचीन।''

नया नियम बताता है कि प्रत्येक कलीसिया में ऐल्डर नियुक्त किए जाते थे (प्रेरितों 14:23)। किसी मण्डली में प्राचीनों की बहुसंख्या ही होती थी और वे विशेष योग्यताओं को पूरा करते थे (1 तीमुथियुस 3:1–7; तीतुस 1:5–9)। कलीसियाओं के सयाना होने पर परमेश्वर की योजना थी कि हर कलीसिया स्वतन्त्र हो, अपने प्राचीनों या ऐल्डरों के निर्देशन में मसीह के लिए काम करे। नये निमय की कलीसिया में स्थानीय कलीसिया से बढ़ा कोई सांसारिक संगठनात्मक ढांचा नहीं था। मण्डलियां साझे लक्ष्यों को पाने के लिए मिलकर काम करती थीं

(देखें 2 कुरिन्थियों 8; 9), परन्तु वे अपनी स्वतन्त्रता को बनाए रखती थीं। मसीह में कलीसिया को सदा के लिए ''रखवाले'' या ''अध्यक्ष'' या ''प्राचीन'' दे दिए क्योंकि कलीसिया को अपने काम के लिए इनकी आवश्यकता रहनी ही थी।

''प्रेरितों,'' ''भविष्यवक्ताओं,'' ''सुसमाचार सुनाने वालों,'' और ''रखवालों'' के लिए यूनानी शब्दों के उलट **उपदेशकों** के लिए यूनानी शब्द से पहले कोई उप-पद नहीं है। कुछ व्याख्याकर्त्ताओं का मानना है कि ''रखवाले'' और ''उपदेशक'' एक ही लोग हैं और इस अनुवाद ''रखवाले उपदेशक'' यानी ''पास्टर गुरु'' जैसे किसी शब्द के साथ होनी चाहिए। दोनों काम स्थानीय कलीसिया में एक-दूसरे के बड़े नज़दीक हैं, हो सकता है कि इसी कारण इनका केवल एक ही उप-पद है।[14] सभी रखवाले यानी पास्टर्ज़ सिखाने वाले यानी उपदेशक होते थे (1 तीमुथियुस 3:2), परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि सभी उपदेशक पास्टर्ज़ यानी रखवाले होते थे।

''उपदेशक'' उसे कहा जाता था जो दूसरों को परमेश्वर के वचन में से समझाता था (प्रेरितों 18:11)। नये नियम में यूनानी शब्द *didaskalos* एक प्रमुख शब्द है और इसे विभिन्न रूपों में इस्तेमाल किया गया है। परमेश्वर की योजना में विश्वासी लोगों द्वारा विश्वासी लोगों को जो दूसरे विश्वासी लोगों को सिखा सकें, सिखाना शामिल था (2 तीमुथियुस 2:2)। सभी उपदेशकों के लिए वही संदेश देना आवश्यक था (1 कुरिन्थियों 4:17; 1 तीमुथियुस 1:3), और झूठे उपदेशकों के सम्बन्ध में चितावनियां दी गई थीं (2 पतरस 2:1)। सिखाना एक ऐसी गम्भीर ज़िम्मेदारी थी कि याकूब ने कहा, ''तुम में से बहुत उपदेशक न बनें'' (याकूब 3:1)। उपदेश करने या सिखाने में आज्ञाएं देना, ताड़ना करना, समझाना और निर्देश देना शामिल था (रोमियों 2:18; कुलुस्सियों 3:16; 1 तीमुथियुस 4:11; 6:2)।

आत्मिक दानों में से एक होने के कारण (1 कुरिन्थियों 12:28, 29) उपदेश करने में प्रकाशन और प्रचार का आश्चर्यकर्म का तत्व था। परन्तु आरम्भिक कलीसिया में ऐसे उपदेशक थे जो बिना किसी संकेत के कि उन्हें आत्मिक दान मिले थे या नहीं दूसरों को वही सिखाते थे जो उन्होंने किसी और से सीखा होता था।[15] वे अन्य मसीही लोगों को मसीह में मिले नये जीवन का ढंग बताते थे और अपने जीवनों में सुसमाचार को अपनाकर दिखाते थे (देखें 4:17-32)। उपदेशक कलीसिया के लिए मसीह का दान थे और रहेंगे, क्योंकि परमेश्वर के प्रकट किए गए वचन की शिक्षा मसीही लोगों के बढ़ने के लिए सदा महत्वपूर्ण रहेगी (1 पतरस 2:2)।

उन दानों का उद्देश्य जो मसीह ने दिए (4:12)

12जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए।

आयत 12. फिर पौलुस ने इन दानों के कारण बताए जो मसीह ने कलीसिया को दिए थे। NASB में इन दानों के दिए जाने का कारण दोहरा लगता है, परन्तु यूनानी धर्मशास्त्र में इसे तिहरा कारण की तरह दिखाया गया है। आयत का आरम्भ *pros* (''के लिए'') से आरम्भ होती है, परन्तु अगले दो वाक्यांशों का आरम्भ *eis* (''में,'' ''या प्रति'') के साथ होता है। NASB के

अनुवादकों ने इसी तथ्य के कारण दोनों के दानों के उद्देश्य को कम समझा होता, चाहे *eis* के दोनों उपयोगों के साथ *pros* के इस्तेमाल का कोई महत्व न हो। रोमियों 3:25, 26 में पौलुस ने एक आयत में परमेश्वर की धार्मिकता का परिचय देने के लिए *eis* और अगली आयत में उसकी धार्मिकता की बात करने के लिए *pros* का इस्तेमाल किया। आयत 12 में उपसर्गों में बदलाव केवल शैली में परिवर्तन हो सकता है जिससे तीनों उपसर्गीय वाक्यांशों को दानों के उद्देश्यों को समझने का अवसर मिले।

पहले तो मसीह के दान इसलिए थे **जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं**। ''सिद्ध हो जाएं'' का अनुवाद यूनानी शब्द *katartismos* से किया गया है, जो नये नियम में केवल यहीं पर मिलता है। इसका अर्थ है ''पूरी तरह से तैयार होने का कार्य, पूरी तरह से लैस होने और पूरी तैयारी करने का कार्य।''[16] क्रिया रूप पौलुस के लेखों में कई बार मिलता है। इस आयत में भावना यह है कि कलीसिया के दानों के रूप में जिन सेवकाइयों की बात पौलुस ने की वे परमेश्वर के मार्गों में प्रशिक्षण देकर कलीसिया के लोगों को सयाना करने के लिए थीं।

सेवा का काम किया जाए। इस संदर्भ में पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया दूसरा उपसर्गीय वाक्यांश है। उसने समझाया कि नेतृत्व की भूमिका वाले लोगों को सेवकों के साथ परिपूर्ण होने के लिए कलीसिया की सहायता करनी चाहिए। इस प्रकार की सेवा के लिए इस्तेमाल होने वाले यूनानी शब्द *diakonia* का नये नियम में कई तरह से इस्तेमाल हुआ है। इसका इस्तेमाल पौलुस की सेवकाई के लिए (2 कुरिन्थियों 3:8, 9; 4:1), उसके सहकर्मियों के लिए (1 कुरिन्थियों 16:15), अर्खिपुस के लिए (कुलुस्सियों 4:17) और तीमुथियुस के लिए (2 तीमुथियुस 4:5) है। मरकुस 10:43 में अनुवाद हुए संज्ञा रूप ''सेवक'' का अर्थ वे लोग हैं जो स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़े होंगे। ''सेवक'' या मिनिस्टर के रूप में सरकारी अधिकारी के लिए (रोमियों 13:4) और कलीसिया में डीकन के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ है (1 तीमुथियुस 3:8)। पहली सदी की कलीसिया की मुख्य विशेषता सेवा थी और मसीह ने कलीसिया को दान दिए ताकि ''सेवा का काम'' किया जाए।

मसीह की देह उन्नति पाए कलीसिया को दिए इन दानों के उद्देश्यों को बताने के लिए इस्तेमाल हुआ तीसरा उपसर्गीय वाक्यांश है। ''उन्नति पाए'' (*oikodomē*) और अलंकारी रूप में ''मकान बनाने'' का संकेत देता है।[17] यहां हुए इस्तेमाल के रूप में इस शब्द का अर्थ ''सुधार''[18] है और यह सुझाव देता है कि कलीसिया को ये दान कलीसिया अर्थात मसीह की देह के अंगों की आत्मिक उन्नति को बढ़ावा देने के लिए तैयार किए गए थे (देखें 1:22, 23)।

प्रेरितों, भविष्यवक्ताओं, सुसमाचार प्रचारकों, रखवालों, उपदेशकों के काम के द्वारा मसीह ने कलीसिया के अस्तित्व के पहले दश्कों के दौरान इसके सही ढंग से काम करने के लिए इसे तैयार किया। इस प्रक्रिया की बातों में (संदेश को प्रकट करने की प्रेरणा और संदेश की पुष्टि के लिए आश्चर्यकर्मों का किया जाना) नये नियम की पुस्तकों के सम्पूर्ण होने और प्रकाशन की पुष्टि होने तक जिसे कैनन माना जाना था। (देखें ''और अध्ययन: कैनन''।) आज पुष्टि के लिए न तो अतिरिक्त प्रकाशन की और न ही आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता है क्योंकि हमारे पास परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई पुस्तक में परमेश्वर का अन्तिम, सम्पूर्ण और अधिकारात्मक वचन है (2 तीमुथियुस 3:16, 17; 1 पतरस 4:11; यहूदा 3)।

दानों के लक्ष्य, जो मसीह ने दिए (4:13-16)

नवजात कलीसिया का सिद्ध बनना (4:13)

13जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं।

आयत 13. सेवा के काम के लिए पवित्र लोगों का तैयार किया जाना और देह का बनाया जाना, तब तक के लिए था **जब तक कि हम सब के सब विश्वास में एक न हो जाएं**। ''जब तक'' सीमा या समय का एक उपसर्ग है जो संकेत देता है कि मसीह के दानों में आश्चर्यकर्मों का तत्व कब तक रहना था। आत्मा की प्रेरणा पाए हुए लोगों ने अपने उद्देश्य को पूरा करना था और फिर यह दान खत्म हो जाना था। कलीसिया में हमेशा वे लोग रहेंगे जिन्हें विशेष मिशन या उद्देश्यों के लिए भेजा जाता है, परन्तु प्रेरिताई का दान खत्म हो जाने के लिए बनाया गया था। कलीसिया के लोग जो भविष्यवक्ताओं की सामर्थ और जज़बे के साथ बोलते हैं उनकी आवश्यकता हमेशा रहेगी, परन्तु भविष्यवाणी का दान खत्म हो चुका है। कलीसिया को स्थानीय कलीसियाओं और मिशन क्षेत्रों में वचन को सिखाने के लिए सुसमाचार प्रचारकों और उपदेशकों की आवश्यकता रहेगी, परन्तु उनका संदेश अब सम्पूर्ण हुए पवित्र शास्त्र के अध्ययन के द्वारा होना आवश्यक है। स्थानी कलीसियाओं की चरवाही के लिए रखवालों की आवश्यकता रहेगी, पर उन्हें परमेश्वर के प्रकट वचन में दिए गए निर्देशों के अनुसार योग्य बनाया जाएगा और व्यक्त किया जाएगा और वे इसी के अनुसार बोलेंगे। पौलुस के मन में कलीसिया के नवजात होने की स्थिति थी जब मसीही लोगों के पास सम्पूर्ण हुआ नया नियम नहीं था और आश्चर्यकर्मों के दानों की आवश्यकता थी। जब कलीसिया परमेश्वर के सम्पूर्ण हुए प्रकाशन के साथ सिद्धता में बढ़ गई, तो आश्चर्यकर्मों के ये दान बन्द हो जाने थे।

नवजात कलीसिया को तीन बातों में एकता प्राप्त करनी आवश्यक थी। पहला तो सदस्यों के लिए ''विश्वास में एक'' होना आवश्यक था। ''विश्वास'' (*pistis*) से पौलुस का अभिप्राय था ''वह विश्वास जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था'' (यहूदा 3) यानी मसीही धर्म। नये नियम में इस प्रकार से ''विश्वास'' का इस्तेमाल आम तौर पर हुआ है, जहां संज्ञा से पहले निश्चित उप-पद मिलता है (देखें प्रेरितों 6:7; 13:8; 14:22; गलातियों 1:23; 6:10)। फिलिप्पियों 1:27 में पौलुस ने ''विश्वास'' को ''सुसमाचार'' के साथ मिलाया। जब नया नियम सम्पूर्ण हो गया तो कलीसिया को और कलीसिया के लिए परमेश्वर का संदेश एक हो गया; इसलिए ''विश्वास की एकता'' बनाई जानी थी।

कलीसिया के लिए **परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक** होना भी आवश्यक था। फिर से, पूरे हुए नये नियम से वह सब मिलना था जो मसीह के विषय में कलीसिया जान सकती है। ''विश्वास'' और ''पहचान'' नये नियम के लिखे और संकलित हो जाने पर सदा के लिए कलीसिया पर प्रकट हो जाने थे।

कलीसिया को सिद्धता में पाई जाने वाली एकता पाना आवश्यक था, जिसका सारांश वह है। एक **सिद्ध मनुष्य** शब्दों में मिलता है। ''सिद्ध'' (*teleios*) का अर्थ है ''सम्पूर्ण'' या

"पूरा।"[19] इसके अलावा *teleion* का संकेत उसके लिए है जो "व्यस्क, पूर्ण विकसित है, ... नन्हें बालकों के विपरीत"; इसे उस प्रकार की सिद्धता से नहीं मिलाया जाना चाहिए जिसका अर्थ "पाप रहित" (*anamartētos*) है।[20] पौलुस कलीसिया के व्यक्तिगत सदस्यों के अर्थ में नहीं सोच रहा था बल्कि विश्वव्यापी कलीसिया के रूप में सोच रहा था। पहले उसने "हम सब" यानी पूरी कलीसिया के रूप में, शब्दों का इस्तेमाल किया था, जैसे यह परमेश्वर की ओर से मिले लिखित प्रकाशन के साथ अपनी सिद्ध स्थिति में पहुंचती है, जिसमें और किसी आश्चर्यकर्मों के कामों की आवश्यकता नहीं है।

मसीह के पूरे डील डौल तक बढ़ें "व्यस्क व्यक्ति" का विस्तार है। 2:15 में पौलुस ने कलीसिया को "एक नया मनुष्य" और 1:23 में मसीह की "परिपूर्णता" कहा था। सम्पूर्ण प्रकाशन पाकर अपने सिद्ध डील डौल में कलीसिया वह बन गई थी जिसके लिए इसे बनाया गया था, "मसीह की परिपूर्णता।" यह "परिपूर्णता" आरम्भ से परमेश्वर की योजना में थी (देखें 1:23; 3:11)। कलीसिया को सम्पूर्ण हुआ नये नियम मिल जाने के बाद आश्चर्यकर्मों के दानों की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि यह सिद्धता या पौरूष तक पहुंच चुकी थी।

देह के हर अंग का विकास (4:14-16)

[14]ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों।

[15]वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं। [16]जिस से सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिणाम से उस में होता है, अपने आप को बढ़ती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।

आयत 14. पौलुस चाहे नवजात कलीसिया को लिख रहा था जो पूरी तरह से बड़ी नहीं हुई थी, पर उसने कहा, **ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों**। कलीसिया को कैसे पता चलना था कि कौन सी शिक्षा सही है और कौन सी नहीं? अपने नवजात होने के समय कलीसिया को आत्मिक दान दिए गए थे, जिनमें से एक दान "आत्माओं की परख" करना था (1 कुरिन्थियों 12:10)। नये नियम के पूरा हो जाने पर गलत सही की पहचान के मानक के लिए वचन होना था।

फिलिप्पियों की पत्री में पौलुस ने इस नियम को बताया:

> यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं: पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिए थोड़ा चला जाता हूं, जिस के लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। हे भाइयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं; परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल करख आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ। निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इमान पाऊं, जिस के लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है। सो हम में से जिसने सिद्ध हैं, यही विचार रखें, और यदि किसी बात में तुम्हारा और ही विचार हो ता परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रकट कर देगा (फिलिप्पियों 2:5)।

नया नियम मिल जाने से कलीसिया ''पहले ही'' सिद्ध है परन्तु कई निजी सदस्य ''अभी सिद्ध'' नहीं हैं।

कलीसिया की सिद्धता की बात करते हुए पौलुस ने एक वचन वाक्यांश ''एक सिद्ध मनुष्य'' वाक्यांश का इस्तेमाल किया; परन्तु कलीसिया के सदस्यों की बात करते हुए उसने बहुवचन शब्द ''बालक'' का इस्तेमाल किया। सिद्ध मसीही लोगों ने जो सच्चाई को जानते थे तुफ़ानी समुद्र पर डोलने वाली नावों की तरह झूठी शिक्षा के झौंकों से उछाले जाकर इधर उधर नहीं घूमना था। जिससे वे अपनी मंज़िल से दूर हो जाते।

झूठी शिक्षा देने वाले कलीसिया के आरम्भिक दिनों में भी होते थे और उनके बारे में पौलुस ने चेतावनी जारी की। बेईमान, चालबाज और चालाक वे **मनुष्यों की ठग विद्या और चतुराई से** कच्चे मसीही लोगों का फायदा लेना चाहते थे। ये झूठी शिक्षा देने वाले लोग शैतान के माध्यम थे, क्योंकि वह चालाकियों और चतुराई, धूर्तता और युक्तियों का इस्तेमाल करता है (देखें यूहन्ना 8:44; 2 कुरिन्थियों 2:11; 11:3; इफिसियों 6:11; 1 तीमुथियुस 4:1)। वे पौलुस और उसकी शिक्षा का विरोध करते थे और नये नियम के संदेश का इसके पूरा हो जाने पर झगड़ते थे। झूठी शिक्षा से गलत शिक्षा बातें ही मिलती थीं और पौलुस द्वारा इफिसुस के मसीही लोगों को इसकी दवा सच्चाई में सिद्ध बनना जो मसीह में है (4:21) और उस सच्चाई को बोलना था (4:15)।

आयत 15. पहले तो इन मसीही लोगों को जो करना था उसमें और जो झूठे शिक्षक सिखा रहे थे उसमें अन्तर देखा जाता है: **वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए**। यहां ''सच्चाई'' पिछली आयत में बताई गई गलतियों के विपरीत है, और ''प्रेम में'' ''चतुराई'' से उलट है। वह ''सच्चाई'' जिसे इफिसियों ने सुना और विश्वास किया था उद्धार का सुसमाचार था (1:13)। सच्चाई को मानकर उन्हें ''प्रेम में'' सच्चाई को बताना आवश्यक था। इस प्रकार से सिखाए हुए लोग और सिखाने वाले दोनों ही मसीह में सिद्धता में बढ़ सकते थे। सच्चाई हमेशा ''प्रेम में'' ही बताई जानी आवश्यक है और झूठ को झूठे दावे के साथ नहीं बताना चाहिए। प्रेम में बताई गई सच्चाई झूठ पर विजय पा लेगी और इसका परिणाम कलीसिया के संज्ञा में और आत्मिक रूप में, व्यक्तिगत रूप में और सामूहिक रूप में बढ़ना होगा। यह व्याख्या बढ़ने की प्रक्रिया में इमारत की तरह कलीसिया के लिए कही गई पौलुस क बात से मेल खाती है (देखें 2:20, 21)।

फिर उसने लिखा, ''**सब *बातों में* उस में जो सिर है, *अर्थात* मसीह में बढ़ते जाएं।**'' कलीसिया के जीवन के हर भाग में सदस्यों के लिए कलीसिया में जिसकी योजना परमेश्वर ने अपनी सनातन मंशा बताई, बढ़ना आवश्यक है (देखें 3:10, 11)। ''में'' (*eis*) संकेत देता है कि ''मसीह जो सिर है'' कलीसिया के ''सदस्यों के बढ़ने का *लक्ष्य* और *उद्देश्य*'' है।[21] पौलुस का ज़ोर यह नहीं था कि मसीही लोग मसीह की समानता में बड़ें। (पवित्र शास्त्र में परखा हुआ तथ्य-रोमियों 8:29; 2 कुरिन्थियों 3:18; फिलिप्पियों 2:5; 1 पतरस 2:21); बल्कि वह मसीह के लिए कह रहा था कि ''वह वह स्रोत है जिस *से* ... अनुग्रह या वह सामर्थ मिलती है जो हमारे लिए बढ़ना सम्भव बनाती है, वह *लक्ष्य* और *उद्देश्य* भी है जिस में हमारा बढ़ना हर चरण में ध्यान देने वाला और होना चाहिए।''[22]

आयत 16. मसीह को सिर बताने के बाद पौलुस ने आगे कहा, **जिस से सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठ** जाती है। पौलुस ने ''देह'' शब्द

का इस्तेमाल अपने लेखों में कई जगह कलीसिया की आकृति के रूप में किया (देखें रोमियों 12; 1 कुरिन्थियों 12; कुलुस्सियों 2:19), विशेषकर इफिसियों में (1:22, 23; 4:4, 12)। यदि कलीसिया को एक होकर अपने बुलाए जाने के योग्य चाल चलना था तो इसे इस आयत में पौलुस द्वारा बताए गए कलीसिया के बढ़ने के महत्वपूर्ण नियम को समझना आवश्यक था। उसने ज़ोर दिया कि मसीह की देह अर्थात कलीसिया को काम करने और बढ़ने की सामर्थ मसीह से मिली है जो देह का सिर है।

यूनानी शब्द *sunarmologeō* का अनुवाद ''मिलकर'' हुआ है और इसका अर्थ ''साथ मिलकर'' है। वर्तमान कृदंत रूप संकेत देता है कि यह प्रक्रिया जारी रहने वाली थी। ''एक साथ मिलकर'' (*sumbibazō*) जो वर्तमान कृदंत भी है, का अर्थ है ''इकट्ठे करना या एक साथ बांधना।''[23] यह ऐसा शब्द है जो ''मेल के संदर्भ में बार-बार लगाया गया है।''[24] इस पत्र में पहले पौलुस द्वारा पहला कृदंत इमारत के रूप में कलीसिया को दिखाने वाले रूपक में किया गया था। उसने कहा था कि इमारत की ईंटों की तरह मसीही लोगों को ''आत्मा के द्वारा परमेश्वर के निवास स्थान'' में ''एक साथ'' लगाया गया था (2:21, 22)। यह दिखाते समय कि कुलुस्सियों को ''उस शिरोमणि को पकड़े'' रहना चाहिए ''जिस से सारी देह जोड़ों और पट्ठों के द्वारा पालन-पोषण पाकर और एक साथ गठकर, परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है'' (कुलुस्सियों 2:19), पौलुस ने दूसरे कृदंत का इस्तेमाल किया।

कुलुस्सियों 2:19 में ''पट्ठों'' (*sundesmos*) के साथ ''हर जोड़'' (*haphē*) जोड़ने वाले ढांचों के हवाले से है जो देह को एक बनाए रखते हैं। अंगों और पट्ठों के पूरी देह के साथ जुड़ें रहने से ही मसीह अर्थात सिर कलीसिया, अर्थात अपनी देह की बढ़ोतरी के लिए जीवन, ऊर्जा और शक्ति ''देता है।''

उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिणाम से उस में होता है इफिसियों को कलीसिया के हर सदस्य के महत्वपूर्ण स्थान और काम को याद दिलाना था। बढ़ने की ऊर्जा जो देह में घूमती है सिर से ही मिलती है। परन्तु देह के हर अंग की भागीदारी देह के सही तरह से बढ़ने के लिए आवश्यक है। हर सदस्य को चाहे उसे अवसर या गुण सीमित ही मिला हो, अपने आपको महत्वपूर्ण मानना चाहिए।

जब हर सदस्य अपना योगदान देता और जब मसीह शक्ति देता है तो इस मेल देह **बढ़ती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए।** हर सदस्य मसीह की देह के ''उन्नति'' करने में योगदान देता है जिससे यह संख्या में और आत्मिक रूप में बढ़ती है। पौलुस ने फिर ''प्रेम'' के महत्व पर ज़ोर दिया (4:2, 15), जो कलीसिया की गतिविधियों की पहचान है। बिना प्रेम के देह में वास्तविक उन्नति नहीं हो सकती। ''प्रेम इस देह का जीवन है और इस कारण कलीसिया के बढ़ने के निर्धारण की अन्तिम कसौटी यह होगी कि इसकी पहचान प्रेम से कितनी है।''[25] प्रेम ''सिद्धता का कटिबन्ध है'' (कुलुस्सियों 3:14)।

यह दिखाने के बाद कि इफिसी लोग ''जिस बुलाहट से बुलाए गए थे उसके योग्य चाल कैसे चल सकते थे'' (4:1)। पौलुस ने ''बढ़ती है कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए'' कहकर इस भाग को समाप्त किया। एक रहकर और सदस्यों के सिद्ध होने से उनके योग्य चाल चलने का पता चलना है।

और अध्ययन के लिए:
कैनन

यूनानी शब्द *kanōn* जिससे हमें अग्रेजी शब्द "canon" मिला है का अर्थ राज मिस्त्रियों और बढ़इयों द्वारा यह जानने के लिए कि सिद्धता ही है नापने वाली छड़ी या फुटा है।[26] पहले पहल इसका इस्तेमाल अम्फिलोसियुस या युसबियुस द्वारा तीसरा या चौथी सदियों शताब्दी ईस्वी में बाइबली लेखों के लिए किया गया था।[27] इससे पहले कलीसिया और उन से पहले यहूदी समुदाय धर्मशास्त्र (*hai graphai*) या पवित्र शास्त्र (*hagiai graphai*) के रूप में पवित्र लेखों के वरण के लिए करते थे। ये शब्द बाइबल के ईश्वरीय अधिकार की पुष्टि करते थे।

प्रेरित और यीशु जिसे हम पुराना नियम कहते हैं परमेश्वर की प्रेरणा से दिए उन लेखों को "मूसा की व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में" कहते थे (लूका 24:44)। पवित्र शास्त्र के ईश्वरीय स्रोत के प्रति उनका व्यवहार 2 तीमुथियुस 3:16 और 2 पतरस 1:19-21 में बेहतरीन ढंग से संक्षिप्त किया गया है।

ई. अर्ल एलिस का कहना है, "इन लेखों से अन्य यहूदी समूहों के साथ मतभेद की किसी बात का पता नहीं चलता कि [पुराने नियम की] कितन पुस्तकों में ईश्वरीय अधिकार था।"[28] "कैनन" शब्द कलीसिया के इस्तेमाल के अर्थ में पुराने और नये दोनों नियमों की पुस्तकों के लिए है जो आज बाइबल में पाई जाती हैं।

बुनियादी तौर पर यह तय करने के लिए कि नये नियम में कैनन होने के लिए किन पुस्तकों को माना जाए कलीसिया को चार कसौटियों से सहायता मिलती है:

1. प्रेरिताई का पद-क्या पुस्तक किसी प्रेरित द्वारा या किसी प्रेरित के सहयोगी द्वारा लिखी गई थी?
2. सामग्री-क्या किसी पुस्तक की सामग्री प्रेरितों की पुस्तकों के स्तर पर थी?
3. विश्वव्यापकता-क्या पुस्तक को कलीसिया द्वारा हर जगह स्वीकार किया गया?
4. प्रेरणा-क्या पुस्तक में ईश्वरीय प्रेरणा से होने का प्रमाण था?[29]

इस प्रक्रिया के लिए हम इस तथ्य को जोड़ सकते हैं कि अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए परमेश्वर का उपाय हमेशा काम करता है। इसलिए हम आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर ने हमें वही सामग्री दी है जो वह चाहता था कि हमें मिले और उसने उन्हीं पुस्तकों को डाला और निकाला है जो वह चाहता था कि हमें उसके वचन के रूप में मिलें।

यह तर्कशील सोच ही थी जो अठारवीं और उन्नीसवीं सदी में बने जिसने बाइबल में पाए जाने वाले पवित्र लेखों की वैधता पर सवाल उठाया।

प्रासंगिकता

कलीसिया को परमेश्वर के दान (4:7-16)

आरम्भिक कलीसिया में परमेश्वर ने अपने लोगों योग्य ढंग से चलने के लिए जैसे वह चाहता था कि वह चलें सहायता करने के लिए विशेष उपाय दिए थे। प्रेरित और भविष्यवक्ता

परमेश्वर के वचन का प्रकाशन पूरा होने तक आवश्यक थे, परन्तु आश्चर्यकर्म करने की योग्यताएं जो उनमें थे शीघ्र ही जाती रहनी थी। सुसमाचार प्रचारकों, रखवालों और उपदशकों के स्थाई दानों की आवश्यकता सदा रहेगी। कलीसिया के अगुवे अब पवित्र लोगों को सिद्ध करने, सेवकाई के काम को करने और देह की उन्नति के लिए पूरा हो चुके नये नियम का इस्तेमाल करते हैं। कलीसिया के लिए दिए गए परमेश्वर के दानों में नवजात कलीसिया के सदस्यों को आत्मिक बालकपन से व्यस्कपन में बढ़ने और सच्चाई और झूठ में अन्तर करने के योग्य बनाया।

आज कलीसिया के लोगों के सच्चाई का सम्मान करने, प्रेम से सच्चाई बताने और स्थानीय मण्डली के काम में सक्रिय योगदान लेने के लिए एक दूसरे को प्रोत्साहित करने पर मण्डली बढ़ती और मज़बूत होती रहेगी।

जे लॉकहर्ट

कलीसिया सिद्ध कैसे हो सकती है (4:7-16)

हमारे पृथ्वी पर रहते पाप रहित सिद्धता नहीं पाई जा सकती है। परन्तु यीशु अपनी कलीसिया को सिद्धता की उस किस्म तक बढ़ाना चाहता है जिसे "उन्नति" कहा जा सकता है। इसे तब पाया जा सकता है जब मसीह की देह के लोग परमेश्वर द्वारा दी गई अपनी भूमिकाओं को समझकर काम करने लेगें। 4:7-16 में पौलुस ने समझाया कि नवजात कलीसिया जैसी होनी चाहिए थी वैसी कैसे बनी। आज हमें एकता, सिद्धता और सयानेपन में बढ़ने के लिए अपनी योग्यताओं का इस्तेमाल करना और दूसरों को बढ़ने में सहायता करना आवश्यक है।

पौलुस ने चौंकाने वाले रूपक के साथ आरम्भ किया: "पर हम में से हर एक को मसीह के दान के प्रामाण से अनुग्रह मिला है। इसलिए वह कहता है, कि वह ऊंचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया, और मनुष्यों को दान दिए" (4:7, 8)। इस आयत के पीछे विचार विजयी सेनापति के एक बड़े युद्ध से लड़ाई खत्म होने और जीत प्राप्त करने के बाद घर वापस आने का है। सेनापति के सम्मान में, कैसर "जैकारे" लगवाता। सेनापति को रोम की गलियों में जलूस के रूप में घुमाया जाता। उसके पीछे-पीछे उसके सिपाही होते और अन्त में वे सम्बन्धी जिन्हें उन्होंने युद्ध में पकड़ा था। अनन्त नगर की गलियों में से इस जुलूस के आगे जाते हुए लोग विजय की रोमी पुकार से चिल्लाते: "जय हो! जय हो!" विजय का जश्न पूरा हो जाने पर सेनापति लूट का माल अपनी सेना के बीच में बांटता और हर किसी को विजयी का दान दिया जाता।

उसी प्रकार से पौलुस ने बुराई की शक्तियों के साथ युद्ध करने के लिए यीशु के पृथ्वी पर उतरने का चित्र बनाया। लड़ाई खत्म होने के बाद यीशु जीत गया था। विजय उसकी थी। फिर वह विजय की लूट का माल अपने साथ ले जाकर वास्तविक अनन्त नगर में महिमा के लिए घर लौट गया। हम परमेश्वर के सबसे बड़े शत्रु पर विजय पाने के बाद यीशु के घर लौटने पर स्वर्गदूतों के उसके स्वागत में "जय हो! जय हो!" कहने की कल्पना कर सकते हैं।

यीशु जब ऊंचे पर चढ़ा तो पौलुस ने कहा कि उसने मनुष्यों को दान दिए। उसने अपनी देह अर्थात कलीसिया को विशेष दान दिए। ये दान उसकी कलीसिया को सिद्ध बनने में सहायता के लिए दिए गए थे।

अपनी कलीसिया के लिए मसीह के दान (4:11)। बाइबल जब आत्मिक दानों की बात

करती है तो आम तौर पर यह पवित्र आत्मा द्वारा लोगों को दी गई विशेष योग्यताओं की बात करती है। यहां पर दान देने वाले के रूप में प्रभु को दिखाया गया है। पौलुस ने यीशु की देह के लिए उसके दानों के रूप में न केवल इन लोगों को बल्कि उनकी विशेष योग्यताओं को बल्कि इन्हें भी देखा। कलीसिया को बनाने में सहायता करने वाले कई समूहों का नाम लिया गया है।

कलीसिया के लिए पहला दान *प्रेरित लोग* था। उनका काम जी उठे मसीह की गवाही देने का था (देखें प्रेरितों 1:22)। उन्होंने ईश्वरीय प्रेरणा के द्वारा और जी उठे प्रभु के दान में आश्चर्यकर्म करने के द्वारा परमेश्वर की इच्छा को प्रकट किया और इसकी पुष्टि भी की।

प्रेरितों की सहायता *भविष्यवक्ताओं* के द्वारा की गई। ये ईश्वरीय प्रेरणा पाए हुए मसीही लोग थे जिन्होंने लिखित पुस्तकों के प्रयाप्त होने के पहले के दिनों में कलीसिया पर परमेश्वर की इच्छा को प्रकट किया था। आवश्यक नहीं था कि उन्होंने जी उठे यीशु को देखा हो, न ही हम पवित्र शास्त्र से साबित कर सकते हैं कि वे आश्चर्यकर्म करते थे। परन्तु उनकी सेवकाई महत्वपूर्ण थी। आरम्भिक कलीसिया में समस्याएं खड़ी होने और उनके निर्णय लिए जाने की आवश्यकता पड़ने पर भविष्यवक्ताओं ने कलीसिया को बताया कि क्या किया जाए।

पौलुस की पहली गवाही के अनुसार (देखें 2:19, 20), हम ''प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नीव पर जिसके कोने का पत्थर यीशु स्वयं ही है बनाए गए'' परमेश्वर का घराना है। प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं का काम मसीह के देह सिद्ध बनाने में अत्यधिक आवश्यक था। बाइबली अर्थ में आज हमारे बीच में कोई प्रेरित या भविष्यवक्ता नहीं है इस कारण पवित्र लोगों को सिद्ध करने की उनकी सेवकाई लिखित वचन के द्वारा जारी रहती है। जो कुछ भी वे चाहते थे कि वे हमें पता हो, हर गवाही जो वह देना चाहते थे, वह हमारे लिए परमेश्वर के वचन में दर्ज है। इन लोगों का लाभ जो कलीसिया के लिए मसीह के दान दे हमारे लिए बाइबल में उनकी शिक्षाओं का अध्ययन करने पर बना रहता है।

अपनी कलीसिया को यीशु का तीसरा दान *सुसमाचार प्रचारक* थे। ''शुभ समाचार ले जाने वाले'' मूलतया ये लोग खोए हुए लोगों को ये बताने के लिए कि कलवरी पर परमेश्वर ने उनके लिए क्या किया है, एक समुदाय से दूसरे समुदाय में जाते थे। देह के हर सदस्य को चाहे दूसरों के साथ विश्वास को साझा करने का आदेश है, परन्तु परमेश्वर ने अपनी कलीसिया के कुछ लोगों को दिया है जो सुसमाचार प्रचार में विशेष रूप में प्रभावी हैं। प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर की सच्चाई को प्रकट करने के द्वारा नींव रखी थी; युगों से सुसमाचार प्रचारक उसी सच्चाई के साथ लोगों को यीशु के लिए जीतते हुए उसी नींव पर बना रहे हैं।

यीशु ने देह को *रखवाले* और *उपदेशक* भी दिए हैं। सुसमाचार प्रचारक जहां लोगों को यीशु में परिवर्तित करने के लिए एक से दूसरे स्थान में जाते हैं वहीं रखवाले और उपदेशक एक जगह में रहकर नये बने विश्वासियों को उनके विश्वास में मज़बूत करते थे।

इन दानों अर्थात प्रेरितों, भविष्यवक्ताओं, सुसमाचार प्रचारकों, रखवालों और उपदेशकों का मिला जुला उद्देश्य, इन तीन शब्दों में संक्षिप्त किया जा सकता है: ''सच्चाई का प्रचार करो!'' यह इसलिए था, ''जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं'' (4:12)। इन लोगों के वचन का प्रचार किए बिना कलीसिया कभी सयाना नहीं होनी थी। आज सच्चाई का प्रचार करने के लिए सुसमाचार प्रचारक, रखवाले और उपदेशक महत्वपूर्ण हैं।

ये लोग जिन्हें यीशु ने अपनी कलीसिया को दिया था, सेवकाई का पूरा काम नहीं करते। उनका काम पवित्र लोगों को परमेश्वर की इच्छा बताना है ताकि वे पवित्र लोग कलीसिया के काम को कर सकें। उन्हें पवित्र लोगों को सिद्ध करना है ताकि ''सेवा का काम किया जाए'' (4:12)। पवित्र लोगों को यह सेवकाई करनी क्यों आवश्यक है? ''... मसीह की देह उन्नति पाए'' (4:12)।

उसकी कलीसिया के लक्ष्य (4:13)। इस सब में मसीह का एक उद्देश्य था। वह सदस्यों से विशेष कारणों के लिए इनके जीवन में काम करवाना चाहता था। जब परमेश्वर के लोगों को उसकी सच्चाई में सही ढंग से प्रशिक्षित किया जाता है और उस सच्चाई पर काम किया जाता है, तो तीन परिणाम निकलते हैं।

(1) एकता। मसीह का देह के लिए पहला उद्देश्य विश्वास की एकता का है। पौलुस ने पहले ही लिखा था कि ''एक ही विश्वास'' (4:5), परन्तु हर कोई उस सब को जो इस सिद्धांत में पाया जाता है समझता नहीं है। कलीसिया जब सुनाए गए वचन को सुनती है तो यह मसीह की सच्चाई की पूरी समझ के आधार पर एकता को पूरा करने के निकट होती रहती है।

(2) उन्नति। पवित्र लोगों को सिद्ध करना दूसरा लक्ष्य है ताकि वे उन्नति कर सकें। पौलुस ने उस उन्नति को ''मसीह के पूरे डील डौल तक'' बढ़ने के रूप में परिभाषित किया। अपरिपक्व लोग अपना ही ध्यान रखते हैं। वे अपनी ही आवश्यकताओं को पूरा होना देखना चाहते हैं। मसीही लोग जो सच्चाई में उन्नति कर रहे हैं वे मसीह के जैसे बनते जाते हैं।

एक बच्चा अपने आपको नहीं खिला सकता। उसके हाथ और उसका मुंह सहयोग नहीं करेगा। वह रेंग या चल नहीं सकता क्योंकि उसके हाथों और उसकी टांगों को पता नहीं है कि मिलकर काम कैसे करना है। समय बीतने के साथ हाथ, टांगें, मुंह और आंखें एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करने लगते हैं, जब तक अन्त में देह उन्नति करके वैसे काम नहीं करने लगती जैसे परमेश्वर ने इसे करने के लिए बनाया है।

कलीसिया में भी ऐसा ही है। हर सदस्य देह में अपनी भूमिका को समझकर उस सच्चाई के नमूने के अनुसार दूसरों की सेवा करते हुए उस काम को पूरा करने लगता है तो वह देह की उन्नति में सहायता कर रहा होता है।

(3)। बच्चे भले बुरे की पहचान नहीं कर पाते। उन्हें पता नहीं होता है कि सही और गलत में अन्तर कैसे किया जाए। यदि माता पिता छोटे बच्चे का ध्यान न रखें तो वह फर्श पर गिरी हर चीज़ अपने मुंह में डाल लेगा। उसको समझ नहीं है।

पौलुस ने कहा कि इफिसी लोग ऐसे न हों: ''ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई के उन के भ्रम की युक्तियों और चतुराई से उन के भ्रम की युक्तियों का, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों'' (4:14)। सयाने मसीही हर नई धार्मिक लहर में जो खड़ी होती है नहीं फंसेंगे। इसके बजाय उन में सयानापन होता है जो उन्हें उस पर बने रहने का विश्वास देती है जिसे वे मानते हैं।

किसी मण्डली को इस प्रकार का सयानापन कैसे मिलता है: पवित्र लोग परमेश्वर के वचन में शिक्षा पाने और सेवा के काम में तैयारी करते रहते हैं। फिर वे उन शिक्षाओं को जो उन्होंने पाई है व्यवहार में लाते हैं। परिणाम यह होता है कि अपने विश्वास में वे पक्के हो जाते हैं।

उसकी कलीसिया का विकास (4:15, 16)। देह बढ़ सकती है। देह उन्नति कर सकती है। ऐसा तभी होता है, जब हर सदस्य वचन को सुनता और देह में अपने कार्य को ढूंढ़ता है, जब हर सदस्य उस काम को जो परमेश्वर ने उसे करने के को दिया है करते हुए दूसरे सदस्यों की सेवा करता है। जब यह सब होता है तो अन्त परिणाम विकास ही है। आत्मिक विकास हर सदस्य के जीवन में हो रहा होता है। उस आत्मिक विकास का देने वाला यीशु ही है।

सारांश। देह की बढ़ोतरी और विकास जिसकी बात पौलुस ने यहां पर की का सम्बन्ध संख्या में बढ़ौतरी से नहीं है। पौलुस के लिए एक स्वस्थ, उन्नति कर रही कलीसिया वही थी जिसमें मसीही बनने वाला हर व्यक्ति देह के जीवन में लगा हुआ हो और दूसरे मसीही लोगों के जीवनों में परमेश्वर की सच्चाई के अनुसार काम कर रहा हो। जब ऐसा होता है तो आत्मिक माहौल से गैर मसीही लोग आकर्षित होंगे और प्रभु द्वारा कलीसिया में मिलाए जाने से बहुत से लोग उद्धार पाएंगे।

क्रिस बुलर्ड

योग्य व्यवहार (4:1-16)

4:1-16 में पौलुस ने उन तीन ढंगों पर ज़ोर दिया जिन में इफिसी लोग अपनी बुलाहट के योग्य चाल चल सकते थे। हमारे ''मेल के बंधन में आत्मा की एकता रखने का यत्न'' करते हुए हमारे लिए यही मार्गदर्शन है। पहला तो हमारे अपने प्रति हमारा व्यवहार है-दीनता (4:2)। दूसरा, दूसरों के प्रति हमारा व्यवहार है-नम्रता सहित, धीरज धरकर प्रेम से एक-दूसरे की सह लेना (4:2)। तीसरा, परमेश्वर के वचन के प्रति हमारा व्यवहार है-सम्मान। हमें पवित्र शास्त्र के अधिकार को जिसमें हम विश्वास करते और उसे मानते हैं, समझना आवश्यक है (4:4-16)।

अध्याय 4 हमें बताता है कि हम अपनी बुलाहट के योग्य चाल चलने में कैसे सफल हो सकते हैं। हमें सात ''एकता के स्तम्भों'' का सम्मान करना (4:4-6) उन दानों का इस्तेमाल करना आवश्यक है जिन्हें मसीह ने ''विश्वास की एकता'' (4:7-13) को पाने में कलीसिया की सहायता के लिए किया है। इसके अलावा हमें परमेश्वर के वचन में बढ़ना आवश्यक है ताकि हमें सच्चाई पता चल सके (4:14) और हमें वह सच्चाई प्रेम से बतानी आवश्यक है (4:5)। अपने योगदान को व्यक्तिगत रूप में करते हुए हम में से हर कोई यह सुनिश्चित करने में सहायता कर सकता है कि देह अर्थात कलीसिया ''प्रेम में उन्नति'' करती जाए (4:16)।

जे लॉकहर्ट

टिप्पणियां

[1]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कन्कोर्डेंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामैंट* (लंदनः सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 888. [2]वही। [3]तरगुमस यहूदियों के लिए इब्रानी धर्मशास्त्र के अरामी अनुवाद और व्याख्याएं थीं, जिनकी मातृ भाषा अब इब्रानी नहीं थी। (*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संपा. जेम्स ऑर [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1939], 5:2910 में जे. ई. एच. थॉम्पसन, ''टरगुमस।'') [4]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलासः वर्ड बुक्स, 1990), 242-43.

[5]द *एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामेंट,* संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:325 में एस. डी. एफ. सैलमण्ड, ''द एपिस्टल टू द इफिसियंस।'' [6]स्पायरस जोडिएट्स, सम्पा., *द कम्पलीट वर्ड स्टडी न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (चटनूगा, टैनिसी: एएमजी पब्लिशर्स, 1991), 907; वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिकविलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 259 भी देखें। [7]लिंकोन, 247. [8]जोडिएट्स, 891. [9]बुलिंगर, 607. [10]जोडिएट्स, 952.

[11]बुलिंगर, 257. [12]वही, 339. [13]वही, 246. [14]लिंकोन, 250. [15]अपुलोस, अक्विल्ला और प्रिसकिल्ला, तुखिकुस, इपफ्रास और अर्खिकुस पर विचार करें (प्रेरितों 18:24-28; कुलुस्सियों 1:7; 4:7, 12, 17)। [16]बुलिंगर, 580. [17]वही, 244. [18]बाउर, 696. [19]बाउर, 995. [20]जोडिएट्स, 886.

[21]सैलमण्ड, 336. [22]वही। [23]केन्नथ एस. वुएस्ट, *वुएस्ट'स वर्ड स्टडीज़ फ्रॉम द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर: इफिसियंस एंड कोलोसियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 104. [24]लिंकोन, 262. [25]वही, 264. [26]हेनरी क्लेरेंस थियसन, *इंट्रोडक्शन टू द न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1943), 3. [27]ई. अर्ल एलिस, *द ओल्ड टैस्टामेंट इन अर्ली क्रिश्चियनिटी: कैनन एंड इंटरप्रिटेशन इन द लाइट ऑफ मॉडर्न रिसर्च* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1991), 3. [28]वही, 7. [29]थियसन, 10.